हिंदी की त्रिवेणी.....

राजभाषा प्रदर्शनी - 2015

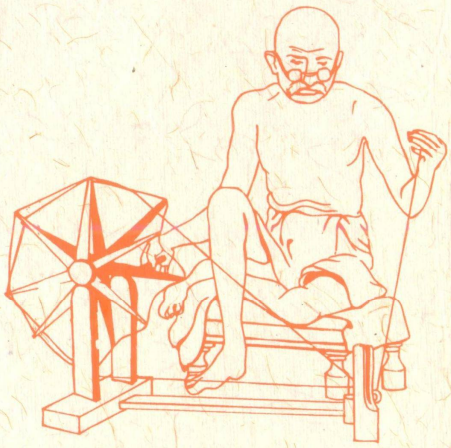

: तारीख :
18 दिसंबर 2015

: समय :
सुबह 8.00 बजे

: स्थान :
वर्धा स्टेशन
मुख्य प्रवेश द्वार

- विनीत -

डॉ. जयदीप गुप्ता
अपर मंडल रेल प्रबंधक
एवं अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी,
मध्य रेल, नागपुर

मध्य रेल, नागपुर
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
तथा
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

हिंदी की त्रिवेणी.....

राजभाषा प्रदर्शनी - 2015

- उद्घाटक -

माननीय एस. के. सूद
महाप्रबंधक मध्य रेल, मुंबई

- अध्यक्ष -

माननीय ओ. पी. सिंह
मंडल रेल प्रबंधक मध्य रेल, नागपुर

- विशेष अतिथि -

श्री एस. के. कुलश्रेष्ठ
प्रधान मुख्य इंजीनियर
एवं मुख्य राजभाषा अधिकारी,
मध्य रेल, मुंबई

- विशेष उपस्थिति -

प्रो. चित्तरंजन मिश्र
प्रति कुलपति
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय
हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

प्रो. अनन्तराम त्रिपाठी
प्रधानमंत्री
राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
वर्धा

मध्य रेल

नागपुर मंडल

राजभाषा प्रदर्शनी –2015

महाप्रबंधक महोदय के वार्षिक निरीक्षण के अवसर पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में आप सभी का हार्दिक स्वागत है।

भारतीय रेल पर सर्वप्रथम सितंबर 1952 को रेलवे बोर्ड की सामान्य शाखा में 'हिंदी अनुवादक' का एक पद निर्माण करके 14 सितंबर 1949 को स्वीकृत राजभाषा हिंदी को लागू किया गया था। आज रेलवे में राजभाषा का एक स्वतंत्र विभाग है, इस विभाग की सहायता से कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार किया जाता है। विभिन्न कार्यालयों द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्यों को प्रतिवर्ष वार्षिक निरीक्षण के अवसर पर राजभाषा प्रदर्शनी के माध्यम से प्रदर्शित करने की परंपरा है।

यह सर्वज्ञात है कि हिंदी एक राजभाषा के साथ–साथ लोकजीवन में बसी एक जीवंत भाषा है। किसी भी भाषा की रक्षा से उसकी पहचान बनती है तो उसके प्रचार एवं प्रसार से उसका विकास होता है। इसलिए इस वर्ष वर्धा स्टेशन पर नागपुर मंडल द्वारा आयोजित राजभाषा हिंदी की प्रदर्शनी के माध्यम से हिंदी भाषा के व्यापक प्रचार एवं प्रसार के उद्देश्य को और अधिक सबल एवं सक्षम बनाने के लिए अन्य दो हिंदी संस्थाओं को भी शामिल किया गया है। वर्धा शहर को हिंदी के प्रचार–प्रसार का ऐतिहासिक महत्व प्राप्त है। राष्ट्र की अस्मिता एवं देश की पहचान जिस हिंदी से होती है ऐसे हिंदी के रथ को गति प्रदान करनेवाले दो सार थी अर्थात देश का प्रथम अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति का केन्द्रीय कार्यालय वर्धा शहर में स्थित है इसलिए इस वर्ष वर्धा स्टेशन पर आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी में इनके द्वारा हिंदी में किए जा रहे कार्य को भी शामिल किया गया है। तो आइए, प्रथम जानते है अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय को –

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना 1997 में की गई थी। देश का यह पहला अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की कर्मभूमि सेवाग्राम (वर्धा) में नागपुर–मुंबई हाइवे पर स्थित है। इसका क्षेत्रफल लगभग 212 एकड़ है। विश्वविद्यालय के आठ विद्यापीठों के अंतर्गत स्नातक, स्नातकोत्तर, शोध और डिप्लोमा के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। विश्वविद्यालय की संक्षेप में संपूर्ण जानकारी को प्रदर्शनी में पावर–प्वाइंट के माध्यम से तो प्रदर्शित किया ही जा रहा है परंतु प्रदर्शनी में विश्वविद्यालय में उपलब्ध कालजयी रचनाओं की *बोलती पांडुलिपियां, पाया पत्र तुम्हारा, तस्वीरों में छिपी कहानियाँ, पत्रिकाओं के चर्चित प्रवेशांक* के कुछ नमूने एवं विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की कुछ प्रतियों के साथ–साथ विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सॉफ्टवेयर उपकरणों की जानकारी को और अन्य बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी को पोस्टर्स के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है। उसी प्रकार जानते है वर्धा शहर में स्थापित राष्ट्रभाषा प्रचार समिति को –

यह समिति जहां स्थापित है उस क्षेत्र का नाम ही हिंदीनगर है। महात्मा गांधीजी द्वारा 1936 को राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की वर्धा में स्थापना की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य था संपूर्ण देश में तथा आवश्यकतानुसार विदेशों में भी हिंदी के प्रति अनुराग उत्पन्न करना एवं राजभाषा हिंदी का प्रचार–प्रसार करना। वर्धा में हिंदी की *प्रबोध, प्रवीण, कोविद, रत्न एवं आचार्य* उपाधि के प्रशिक्षण की व्यवस्था की जाती है। आज देशभर में इनकी 23 प्रांतीय समितियों द्वारा और अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी के साथ–साथ 15 से अधिक विदेशों में स्थापित शाखाओं के माध्यम से विश्व स्तर पर हिंदी का प्रचार एवं प्रसार किया जा रहा है।

इस प्रकार नागपुर मंडल रेल कार्यालय की राजभाषा प्रदर्शनी मे हिंदी की त्रिवेणी का संगम हुआ है।

हमें विश्वास है कि आप प्रदर्शनी में पधारकर राष्ट्र की अस्मिता राजभाषा एवं जनभाषा हिंदी की मूल चेतना का गौरव बढाएंगे।

धन्यवाद,